[This Question Paper Contains 4 Printed Pages]

Your Roll No. .....

Sr. No. of Question Paper : 2496 -C

Unique Paper Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : B.Com (Prog.)

Semester : IV

समय: 3 घण्टे पूर्णांक: 75

छात्रों के लिए निर्देश:–

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. हिंदी गद्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी उपन्यास के विकास क्रम का सामान्य परिचय दीजिए।

2. कहानी के तत्वों के आधार पर 'गुण्डा' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। (12)

अथवा

'पक्षी और दीमक' की मूल संवेदना लिखे।

3. 'वैष्णवता और भारतवर्ष' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'ईमानदारी' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'बिंबिया' की चारित्रिक विशेषताओं को सविस्तार लिखें।

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) हिंदी कहानी

(ख) भारतेन्दुयुगीन नाटक

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए। (10×2 = 20)

(क) किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील–मुख्तार उनके आज्ञा पालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आये। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आये। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गयी। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किंतु लोभ से डावाँडोल।

या

फिर बिबिया तो विद्रोह की कभी राख न होनेवाली ज्वाला थी। संसार ने उसे अकारण अपमानित किया और वह उसे युद्ध की चुनौती न देकर भाग खड़ी हुई, यह कल्पना–मात्र उसके आत्मघाती संकल्प को, बरसने से पहले आँधी में पड़े हुए बादल के समान कहीं–का–कहीं पहुँचा सकती थी। पर संघर्ष के लिए उसके सभी अस्त्र टूट चुके थे। मूर्च्छितावस्था में पहाड़–सा अडिग साहसी भी कायरता की उपाधि बिना पाये हुए ही संघर्ष से हट सकता है।

संसार ने बिबिया के अन्तर्धान होने का जो कारण खोज लिया है, वह संसार के ही अनुरूप है; पर मैं उसके निष्कर्ष मानने के लिए बाध्य नहीं।

आज भी जब मेरी नाव, समुद्र का अभिनय करने में बेसुध वर्षा की हरहराती यमुना को पार करने क़ा साहस करती है, तब मुझे वह रजक–बालिका याद आये बिना नहीं रहती। एक दिन वर्षा के श्याम मेघांचल की लहराती हुई छाया के नीचे, इसकी उन्मादिनी लहरों में उसने पतवार फेंक कर अपनी जीवन–नइया खोल दी थी।

(ख) हमारी परम्परा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्ज्वल हैं। हमारे अनजान में भी ये बातें हमें एक खास दिशा में सोचने की प्रेरणा देती हैं। यह जरूर है कि परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। उपकरण नये हो गये हैं और उलझनों की मात्रा भी बहुत बढ़ गयी है, पर मूल समस्याएँ बहुत अधिक नहीं बदली हैं। भारतीय चित्त जो आज भी 'अधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। वह 'स्व' के बन्धन को आसानी से नहीं छोड़ सकता। अपने–आप पर अपने–आपके द्वारा लगाया हुआ बन्धन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है।

या

जातवाला (ब्राह्मण)– जात ले जात, टके सेर जात। एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायं और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झुठ को सच करैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिंदू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचैं, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानैं, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावैं। वेद धर्म्म कुल मरजादा सचाई बड़ाई सब टके सेर। लुटाया दिया अनमोल माल ले टके सेर।

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019